HISTORY

1

विजय नगर साम्राज्य (स्थापना, नायक तथा सुल्तान)

अभिलेखों तथा परंपराओं से पता चलता है की विजयनगर की नींव दो भाई थे हरिहर तथा बुक्का राय ने 1336 ई० में रखी जब दिल्ली में सुल्तान मुहम्मद तुगलक का शासन था।

हरिहर तथा बुक्का राय ने दिल्ली सुल्तानों से स्वतंत्र होकर विजयनगर साम्राज्य की स्थापना की। उन्होंने तुंगभद्रा नदी के दक्षिणी तट पर विजयनगर नामक नगर भी बसाया। दोनों भाइयों ने बहुत सी विजयें प्राप्त करके अपने राज्य का विस्तार किया फलतः विजयनगर नामक एक बड़ा साम्राज्य बन गया जिसमें कि वर्तमान तमिलनाडु तथा मैसूर के कुछ भाग सम्मिलित थे। विजयनगर साम्राज्य पर लगभग तीन शताब्दियों के काल में तीन वंशों ने शासन किया।

इस साम्राज्य की सीमाएं बदलती रही और इसमें भिन्न-भिन्न धर्मों को मानने वाले और भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलने वाले लोग रहते थे। विजयनगर बहुत से विरोधी राज्यों से घिरा हुआ था। इनमें से दिल्ली के सुल्तान तथा उड़ीसा के गजपति शासक थे।

जो कि उपजाऊ नदी घाटियों और उसमें स्थित क्षेत्रों के बंदरगाहों वाले और विदेशों के साथ व्यापार से बहुत लाभकारी स्त्रोतों पर नियंत्रण करना चाहते थे। विदेशों के साथ संबंधों के परिणाम स्वरूप इनमें भवन निर्माण कला के विचारों का आदान प्रदान होने लगा।

इस साम्राज्य की स्थापना से बहुत पहले तमिलनाडु में चोल तथा कर्नाटक में होयसल राजा बहुत शक्तिशाली रहे थे। विजयनगर के शासक तथा उनके नगरों के लोगों ने बहुत मंदिर बनवाए जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध तंजौर का बृहदेश्वर मंदिर तथा बेलूर (Belur) का चेन्नाकेशव मंदिर थे। विजयनगर के शासक जिन्हें राय कहा जाता था ने भी इन परम्पराओं को जारी रखते हुए बहुत भव्य मंदिर बनवाए और इन कलाओं को प्रगति के शिखर पर पहुँचाया। तत्कालीन लोग विजयनगर साम्राज्य को कर्नाटक साम्राज्य कहते थे।